संपादक का नोट

प्रिय पाठकों, प्रभु की स्तुति करो। ऐसा लगता है कि नया साल अभी आया था, फिर भी हम 2023 के दूसरे महीने में हैं। समय इतनी गति से बीत रहा है और बहुत कुछ करना बाकी है!

मत्ती 5:16 ''उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने ऐसा चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें।'' उत्पत्ति की पुस्तक में, हम पढ़ते हैं कि कैसे परमेश्वर ने संसार की रचना की, और कैसे उन्होंने उजियाले को अन्धकार से अलग किया। परमेश्वर जिसने हमें चुना है, उनकी रचना ने, हमारे खालीपन को भरकर और हमारे जीवन से अंधकार को अलग करके हमें उनका पात्र बनने के योग्य बनाया है। एक बार जब परमेश्वर हमारे जीवन को छू लेते है, तो हमारा जीवन प्रकाश से भर जाता है, और हमारे भीतर कोई अंधकार नहीं रहता। यह रोशनी इस दुनिया में हमारे बीच तभी चमकेगी, जब हम परमेश्वर के शक्तिशाली नाम, और हमारे जीवन में उनके महान कार्यों की महिमा करेंगे, उन्हें ऊँचा उठाएंगे और उनकी गवाही देंगे। हमारे जीवन और अच्छे कार्यों को देखकर जो हम करते हैं, क्योंकि हमारे जीवन में परमेश्वर का प्रकाश है, संसार के लोग हमारे स्वर्गीय पिता की स्तुति करेंगे!

यशायाह 60:2–3 ''देख, पृथ्वी पर तो अन्धियारा और राज्य राज्य के लोगों पर घोर अन्धकार छाया हुआ है; परन्तु तेरे ऊपर यहोवा उदय होगा, और उसका तेज तुझ पर प्रगट होगा। जाति जाति तेरे पास प्रकाश के लिये और राजा तेरे आरोहण के प्रताप की ओर आएँगे।'' चारों ओर देखें – जहाँ भी आप देखते हैं, वहाँ पाप, दर्द और पीड़ा है। परमेश्वर का वचन कहता है कि पृथ्वी घोर अन्धियारे से ढकी होगी, परन्तु जो यहोवा की आज्ञा के अनुसार उनके साथ चलते हैं, उन पर यहोवा का तेज चमकेगा। जब हम परमेश्वर के प्रकाश में होते हैं, तो हम न हिलेंगे, न हम नष्ट होंगे। न केवल उनके प्रकाश की महिमा हम पर चमकेगी, बल्कि बहुत से लोग उस प्रकाश को हमारे जीवन में चमकते हुए देखेंगे, और वे हमारी ओर खिंचे चले आएंगे। जैसा कि हम चुने हुए हैं, हमारे लिए यह महत्वपूर्ण है कि हम जगत की ज्योति को स्वीकार करें, क्योंकि यीशु ने हमारे लिए अपना खून बहाया है ताकि हमें अंधेरे में न रहना पड़े।

इसलिए, प्यारे भाइयों और बहनों, आज परमेश्वर एक बार फिर हमारे जीवन में प्रवेश करने के लिए तैयार हैं यदि हम उन्हें ऐसा करने की अनुमति दें। एक बार जब वे आपके जीवन में प्रवेश कर जाते हैं, तो अंधकार के लिए कोई स्थान नहीं होता। एक बार जब उनका प्रकाश हमें भर देता है, तो हमारा जीवन स्वतः ही धन्य हो जाएगा। याद रखें, जब हमारे स्वर्गीय पिता हमारे जीवन को छूते हैं और हमारे जीवन को समृद्ध करते हैं, तभी ये आशीषें स्थायी होंगी, क्योंकि जीवन में हर दूसरी चीज अस्थायी है। 1 इतिहास 17:27 ''और अब तू ने प्रसन्न होकर, अपने दास के घराने पर ऐसी आशीष दी है, कि वह तेरे सम्मुख सदा बना रहे, क्योंकि हे यहोवा, तू आशीष दे चुका है, इसलिये वह सदा आशीषित बना रहे।'' इसलिए, परमेश्वर का प्रकाश आपके जीवन में चमके, और वह प्रकाश इतना अधिक चमके, कि आपका जीवन बहुतों के लिए एक आशीष हो!

हम फिर से मिलें तब तक,

पास्टर सरोजा म।

आज्ञाकारिता

आशीर्वाद की ओर ले जाती है

जो आज्ञा मानेंगे उन्हें आशीष मिलेगी

उत्पत्ति 26:2 ''वहाँ यहोवा ने उसको दर्शन देकर कहा, "मिस्र में मत जा; जो देश मैं तुझे बताऊँ उसी में रह।'' क्या कारण था कि परमेश्वर ने इसहाक को आशीष दी? इसहाक की आज्ञाकारिता के कारण परमेश्वर ने उसे आशीष दी। जब इस्राएल में अकाल पड़ा, तो लोग देश छोड़कर मिस्र भाग गए। परमेश्वर ने इसहाक को दर्शन देकर उस से कहा, 'मिस्र को मत जा, परन्तु इसी देश में बना रह, और मैं तुझे आशीष दूंगा।' उत्पत्ति 26:1–3 ''उस देश में अकाल पड़ा, यह उस पहले अकाल से अलग था जो अब्राहम के दिनों में पड़ा था। इसलिये इसहाक गरार को पलिश्तियों के राजा अबीमेलेक के पास गया। वहाँ यहोवा ने उसको दर्शन देकर कहा, "मिस्र में मत जा; जो देश मैं तुझे बताऊँ उसी में रह। तू इसी देश में रह, और मैं तेरे संग रहूँगा, और तुझे आशीष दूँगा; और ये सब देश मैं तुझ को और तेरे वंश को दूँगा; और जो शपथ मैं ने तेरे पिता अब्राहम से खाई थी, उसे मैं पूरी करूँगा।'' इसहाक की आज्ञाकारिता के द्वारा, यहोवा ने उसके बाद इसहाक को सौ गुना आशीष दी। हम देखते हैं कि अकाल के कारण इस्राएल में स्थिति अनुकूल नहीं थी। इसके अलावा, लोग इसहाक के समर्थक नहीं थे, और उन्होंने उसका विरोध किया।

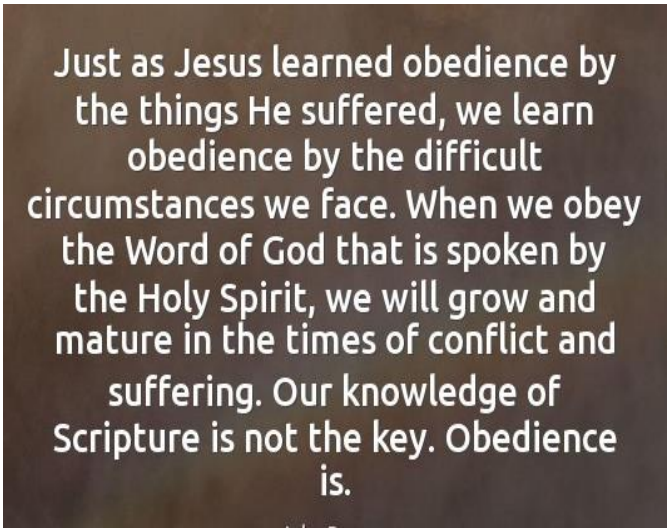

प्रेरितों 5:32 ''हम इन बातों के गवाह हैं और वैसे ही पवित्र आत्मा भी, जिसे परमेश्वर ने उन्हें दिया है जो उसकी आज्ञा मानते हैं।'' जो लोग प्रभु परमेश्वर के आज्ञाकारी हैं, वे आशीष देते हैं। अकाल के दौरान इसहाक का समर्थन करने वाला कोई नहीं था, क्योंकि लोग देश छोड़कर भाग गए थे। इसहाक को कोई सहारा नहीं मिला, क्योंकि लोग उनके दिलों में कुड़कुड़ा रहे थे और बड़बड़ कर रहे थे। इसहाक के द्वारा परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने के कारण ही उसे शक्तिशाली रूप से आशीषित किया गया था। परमेश्वर ने इसहाक से कहा कि जो लोग देश छोड़ना चाहते हैं उन्हें जाने दे, परन्तु यह कि वह इस देश को न छोड़े। परमेश्वर ने इसहाक और उसके परिवार को यदि वह अकाल से प्रभावित देश में रहता है तो आशीष देने और उनके साथ रहने की प्रतिज्ञा की। इसहाक ने परमेश्वर की आज्ञा का पालन वैसे ही किया जैसे एक बच्चा अपने पिता की आज्ञा का पालन करता है, और उसे कई गुना अधिक आशीष मिली।

जब यीशु मसीह स्वर्ग छोड़कर इस संसार में आए, तो उन्होंने इस पृथ्वी पर अपने लिए अपने पिता परमेश्वर की प्रत्येक प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए स्वयं को पवित्र आत्मा के हाथों में सौंप दिया। फिलिप्पियों 2:8–9 ''और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, और यहाँ तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु, हाँ, क्रूस की मृत्यु भी सह ली। इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान् भी किया, और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है,'' प्रभु परमेश्वर ने अपने पुत्र को ऊंचा किया और उनका नाम इस संसार में सभी नामों से ऊपर रखा।

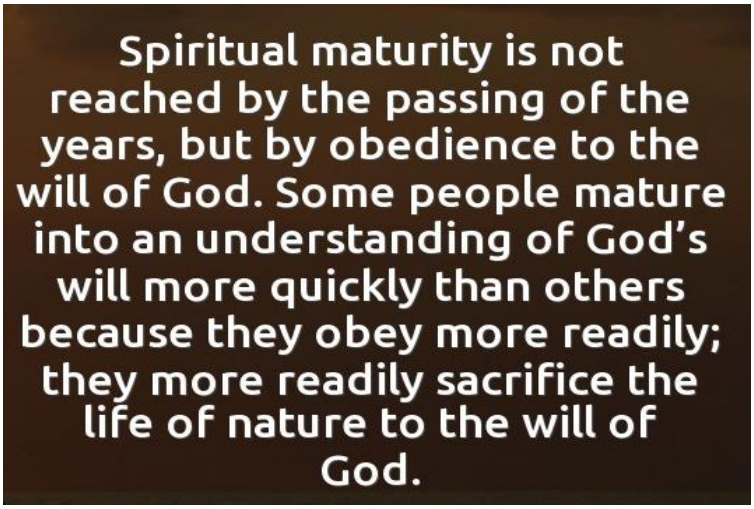

इसहाक बहुत मेहनती और तेज काम करने वाला व्यक्ति था, और उसने कभी भी अपने हाथों में दिए गए किसी भी काम को पूरा करने में देरी नहीं की। वह एक किसान और चरवाहा था, और वह कभी भी किसी बात पर कुड़कुड़ाया या शिकायत नहीं करता था। उसके पास कई भेड़ें थीं, और जब वह उनका पालन–पोषण कर चुका था, तो उसने खेतों में मेहनत की और फसलों की कटाई की। साथ ही, उसने उन सभी कुओं को फिर से खोल दिया जिन्हें अमालेकियों ने उसके पिता अब्राहम की मृत्यु के बाद बंद कर दिया था और भर दिया था। उत्पत्ति 26:12–31 ''फिर इसहाक ने उस देश में जोता बोया, और उसी वर्ष में सौ गुणा फल पाया; और यहोवा ने उसको आशीष दी, और वह बढ़ा और उसकी उन्नति होती चली गई, यहाँ तक कि वह अति महान् पुरुष हो गया। जब उसके भेड़–बकरी, गाय–बैल, और बहुत से दास–दासियाँ हुईं; तब पलिश्ती उससे डाह करने लगे। इसलिये जितने कुओं को उसके पिता अब्राहम के दासों ने अब्राहम के जीते जी खोदा था, उनको पलिश्तियों ने मिट्टी से भर दिया। तब अबीमेलेक ने इसहाक से कहा, "हमारे पास से चला जा; क्योंकि तू हम से बहुत सामर्थी हो गया है।" अतः इसहाक वहाँ से चला गया, और गरार की घाटी में अपना तम्बू खड़ा करके वहाँ रहने लगा। तब जो कुएँ उसके पिता अब्राहम के दिनों में खोदे गए थे, और अब्राहम के मरने के बाद पलिश्तियों ने भर दिए थे, उनको इसहाक ने फिर से खुदवाया; और उनके वे ही नाम रखे, जो उसके पिता ने रखे थे। फिर इसहाक के दासों को घाटी में खोदते–खोदते बहते जल का एक सोता मिला। तब गरार के चरवाहों ने इसहाक के चरवाहों से झगड़ा किया और कहा, "यह जल हमारा है।" इसलिये उसने उस कुएँ का नाम एसेक रखा; क्योंकि वे उससे झगड़े थे। फिर उन्होंने दूसरा कुआँ खोदा, और उन्होंने उसके लिये भी झगड़ा किया; इसलिये उसने उसका नाम सित्ना रखा। तब उसने वहाँ से निकल कर एक और कुआँ खुदवाया; और उसके लिये उन्होंने झगड़ा न किया; इसलिये उसने उसका नाम यह कहकर रहोबोत रखा, "अब तो यहोवा ने हमारे लिये बहुत स्थान दिया है, और हम इस देश में फूले–फलेंगे।" वहाँ से वह बेर्शेबा को गया। और उसी दिन यहोवा ने रात को उसे दर्शन देकर कहा, "मैं तेरे पिता अब्राहम का परमेश्वर हूँ; मत डर,

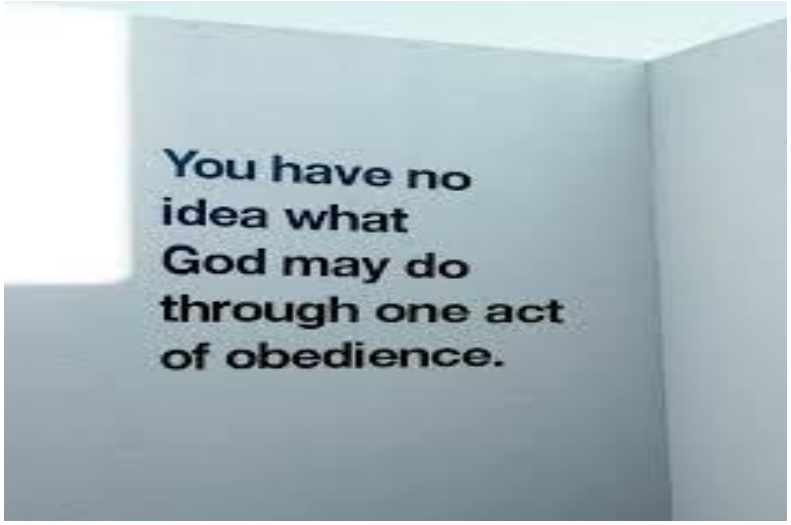

क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ, और अपने दास अब्राहम के कारण तुझे आशीष दूँगा, और तेरा वंश बढ़ाऊँगा।" तब उसने वहाँ एक वेदी बनाई, और यहोवा से प्रार्थना की, और अपना तम्बू वहीं खड़ा किया; और वहाँ इसहाक के दासों ने एक कुआँ खोदा। तब अबीमेलेक अपने मंत्री अहुज्जत और अपने सेनापति पीकोल को संग लेकर, गरार से उसके पास गया। इसहाक ने उनसे कहा, "तुम ने मुझ से बैर करके अपने बीच से निकाल दिया था, अब मेरे पास क्यों आए हो?" उन्होंने कहा, "हम ने तो प्रत्यक्ष देखा है कि यहोवा तेरे साथ रहता है; इसलिये हम ने सोचा कि तू तो यहोवा की ओर से धन्य है, अतः हमारे तेरे बीच में शपथ खाई जाए, और हम तुझ से इस विषय की वाचा बन्धाएँ, कि जैसे हम ने तुझे नहीं छुआ, वरन् तेरे साथ केवल भलाई ही की है, और तुझ को कुशल क्षेम से विदा किया, उसके अनुसार तू भी हम से कोई बुराई न करेगा।" तब उसने उनको भोज दिया और उन्होंने खाया–पिया। सबेरे उन सभों ने तड़के उठकर आपस में शपथ खाई; तब इसहाक ने उनको विदा किया, और वे कुशल क्षेम से उसके पास से चले गए।''

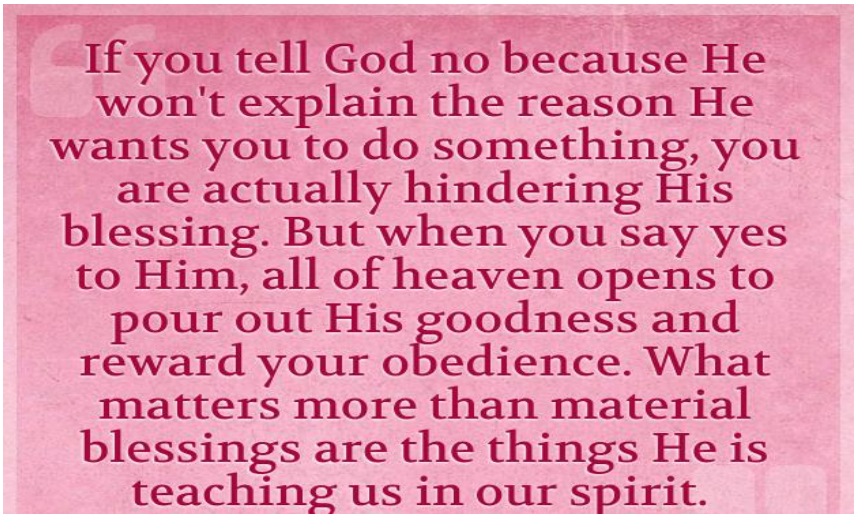

इसहाक ने परमेश्वर की हर आज्ञा का पालन किया, इसलिए वह इस संसार में फला–फूला और समृद्ध हुआ। उत्पत्ति 26:16 ''तब अबीमेलेक ने इसहाक से कहा, "हमारे पास से चला जा; क्योंकि तू हम से बहुत सामर्थी हो गया है।'' हमने देखा है कि आत्मा में जन्म लेने वालों और शरीर में जन्म लेने वालों के बीच हमेशा एक विरोध होता है – जैसा कि इसहाक और इश्माएल के मामले में हुआ था। लेकिन इसहाक ने हमेशा हंसकर सभी समस्याओं को मुस्कुराकर दूर कर दिया और अपने भीतर शांति पाई। अमालेकियों ने महसूस किया कि इसहाक ने जहाँ कहीं भी अपने हाथ रखे वहां परमेश्वर से अपार आशीषें प्राप्त कीं। इन आशीषों का कारण क्या था? ऐसा इसलिए था क्योंकि इसहाक ने अपने जीवन में हर परिस्थिति में परमेश्वर की आज्ञा मानी। उत्पत्ति 26:26 ''तब अबीमेलेक अपने मंत्री अहुज्जत और अपने सेनापति पीकोल को संग लेकर, गरार से उसके पास गया।'' जिन अमालेकियों ने एक बार इसहाक को देश छोड़ने के लिए कहा था, अब उन्होंने उनसे शांति बनाए रखने के लिए कहा। उत्पत्ति 27–28 ''इसहाक ने उनसे कहा, "तुम ने मुझ से बैर करके अपने बीच से निकाल दिया था, अब मेरे पास क्यों आए हो?" उन्होंने कहा, "हम ने तो प्रत्यक्ष देखा है कि यहोवा तेरे साथ रहता है; इसलिये हम ने सोचा कि तू तो यहोवा की ओर से धन्य है, अतः हमारे तेरे बीच

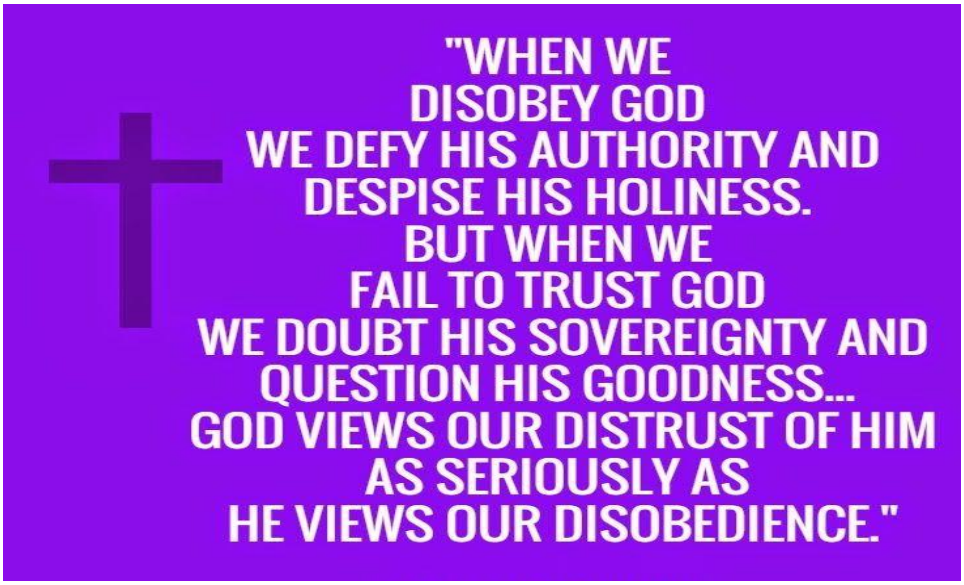

में शपथ खाई जाए, और हम तुझ से इस विषय की वाचा बन्धाएँ,'' इसहाक के विरोध में रहने वाले अमालेकियों ने इसहाक पर परमेश्वर का हाथ और परमेश्वर के अनुग्रह और आशीषों को देखा, इसलिए वे एक बार फिर इसहाक के साथ हाथ मिलाना चाहते थे। इसहाक का अर्थ है 'हँसी और शांति', और अपने नाम के अनुरूप, इसहाक हमेशा अपने आप को और अपने आसपास के लोगों के साथ खुश और शांति में रहता था। हम यहां देखते हैं कि जब हम परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते हैं, तो उनका आशीष हम पर बहुत अधिक होता है, और हमारे आस–पास के लोग उसी को देखेंगे और उसकी प्रशंसा करेंगे।

हमें अपने परमेश्वर द्वारा दिए गए प्रेम, आशीषों और जीवन के पट्टे को कभी नहीं भूलना चाहिए। कई घरों में, हमने देखा है कि पति अब्राहम की तरह होने के बजाय दुष्ट आदमी नाबाल की तरह हैं। परमेश्वर चाहते है कि घर की स्त्रियाँ अबीगैल की तरह बुद्धिमान और होशियार हों, ताकि उनके परिवारों को परमेश्वर की दया और अनुग्रह प्राप्त हो सके। (1 शमूएल 25)

हम कल के बारे में नहीं जानते हैं, और भविष्य में हमारा जीवन क्या है, लेकिन हमारे जीवन को सच्चाई और धार्मिकता में जीना महत्वपूर्ण है। जैसा कि हम पहले उत्पत्ति 26:12–16 में पढ़ते हैं, अमालेकियों ने इसहाक के जीवन में दुःख और पीड़ा लाई, तौभी उसने उनके प्रति बुरा नहीं सोचा। उसने खुशी–खुशी अपना काम किया और लगन से उसको अपनाया और उसे पूरा किया।

भजन संहिता 126:5–6 ''जो आँसू बहाते हुए बोते हैं, वे जयजयकार करते हुए लवने पाएँगे। चाहे बोनेवाला बीज लेकर रोता हुआ चला जाए, परन्तु वह फिर पूलियाँ लिए जयजयकार करता हुआ निश्चय लौट आएगा।''

हमें भी कभी कुड़कुड़ाना नहीं चाहिए, बल्कि अपने दिलों में आनंदित होते हुए परमेश्वर के सभी कार्यों को पूरा करना चाहिए। जब हम प्रभु के लिए काम कर रहे होते हैं, तो हमें अपने दिल में कभी कुड़कुड़ाना या बड़बड़ाना नहीं चाहिए। भजन संहिता 128:2 ''तू अपनी कमाई को निश्चय खाने पाएगा; तू धन्य होगा, और तेरा भला ही होगा।'' दिल में कुड़कुड़ा कर किया गया कोई भी काम फल नहीं देगा। बल्कि, जब हम परमेश्वर के कार्य को आनंदपूर्वक पूरा करते हैं, तो वह हमें अत्यधिक आशीष देंगे। यह हमें हमेशा याद रखना चाहिए। सभोपदेशक 11:6 ''भोर को अपना बीज बो, और साँझ को भी अपना हाथ न रोक; क्योंकि तू नहीं जानता कि कौन सफल होगा, यह या वह, या दोनों के दोनों अच्छे निकलेंगे।'' हमारे दिल में कई योजनाएँ हो सकती हैं, लेकिन याद रखें, प्रभु की कृपा हम पर होनी

चाहिए, ताकि हमारी योजनाएँ फलदायक हों। नीतिवचन 21:31 ''युद्ध के दिन के लिये घोड़ा तैयार तो होता है, परन्तु जय यहोवा ही से मिलती है।'' हम बहुत सी योजनाएँ बना सकते हैं, और हम तीव्रता से तैयारी कर सकते हैं, परन्तु हमारी विजय केवल परमेश्वर यहोवा की ओर से होती है। हम जो बोते हैं उसे काटने के लिए, हम पर परमेश्वर का अनुग्रह होना चाहिए। यीशु मसीह इस दुनिया में शांति फैलाने आए थे। प्रभु का दूत मनुष्यों के सामने प्रकट हुआ और कहा, लूका 2:14 ''आकाश में परमेश्वर की महिमा और पृथ्वी पर उन मनुष्यों में जिनसे वह प्रसन्न है, शान्ति हो।'' प्रभु परमेश्वर ने हमारे हृदयों में शांति के बीज बोए हैं, और इन बीजों को फल देना चाहिए। इफिसियों 4:3 ''और मेल के बन्धन में आत्मा की एकता रखने का यत्न करो।'' हमारे परमेश्वर ने हमें अपनी आत्मा में एक किया है और हमें अपनी शांति से जोड़ा है। हमारा कोई भी कार्य हमें प्रभु से अलग नहीं करना चाहिए – हमारी लापरवाही, अभिमान, अहंकार, ईर्ष्या आदि कभी भी प्रभु और हमारे रास्ते में नहीं आने चाहिए। प्रभु ने हमें अपने साथ एकता में रखने के लिए अपनी आत्मा को हम में रखा है। रोमियों 16:20 ''शान्ति का परमेश्वर शैतान को तुम्हारे पाँवों से शीघ्र कुचलवा देगा। हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम पर होता रहे।'' जब परमेश्वर का अनुग्रह हम पर होगा, तब शांति का परमेश्वर शैतान को अपने पांवों तले रौंद डालेगा। यह कलवारी के क्रूस पर है कि यीशु मसीह ने शैतान को छह घंटे तक कुचला था, इसलिए हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा हम पर हमेशा बनी रहे।

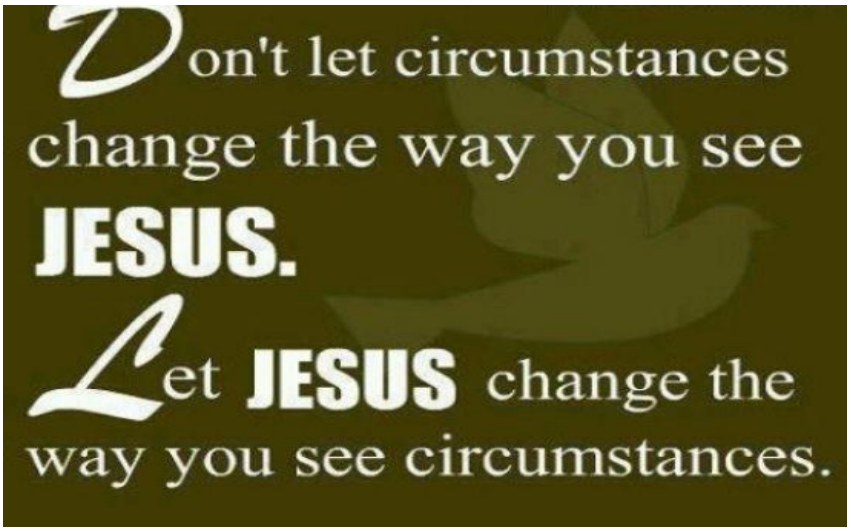

मिस्र में, फिरौन ने सभी नवजात इब्री लड़कों को नष्ट करने का आदेश जारी किया था। यह केवल परमेश्वर का अनुग्रह ही था, कि मिस्री धाइयों ने उन्हें नहीं मारा, वरन फिरौन को बहाना दिया। हमें अपने जीवन में परमेश्वर का अनुग्रह, दया और कृपा प्राप्त करनी चाहिए। यद्यपि फिरौन ने बड़े क्रोध में, दाइयों को सभी नवजात इब्री लड़कों को मारने के लिए कहा, परमेश्वर की कृपा इस्राएली स्त्रियों पर थी, और मिस्र की इन दाइयों की दृष्टि में उन्हें अनुग्रह मिला। निर्गमन 1:16–19 '''"जब तुम इब्री स्त्रियों को बच्चा उत्पन्न होने के समय प्रसव के पत्थरों पर बैठी देखो, तब यदि बेटा हो तो उसे मार डालना, और बेटी हो तो जीवित रहने देना।" परन्तु वे धाइयाँ परमेश्वर का भय मानती थीं, इसलिये मिस्र के राजा की आज्ञा न मानकर लड़कों को भी जीवित छोड़ देती थीं। तब मिस्र के राजा ने उनको बुलवाकर पूछा, "तुम जो लड़कों को जीवित छोड़ देती हो, तो ऐसा क्यों करती हो?" धाइयों ने फ़िरौन को उत्तर दिया, "इब्री स्त्रियाँ मिस्री स्त्रियों के समान नहीं हैं; वे ऐसी फुर्तीली हैं कि धाइयों के पहुँचने से पहले ही उनको बच्चा उत्पन्न हो जाता

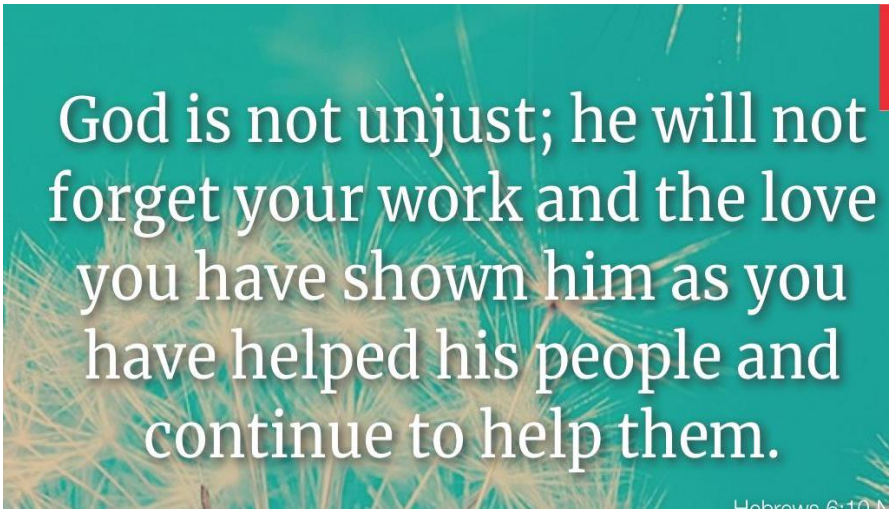

है।'' धाइयों ने फिरौन को बताया कि इब्री महिलाएं बहुत सक्रिय और फुर्तीली थीं, और उनके पहुंचने से पहले ही उनको बच्चा उत्पन्न हो जाता था।

फिर भी, फिरौन बड़े क्रोध में इब्रानी लड़कों के नवजात बच्चों के विरुद्ध साजिश रचता रहा। निर्गमन 1:21–22 ''इसलिये कि धाइयाँ परमेश्वर का भय मानती थीं, उसने उनके घर बसाए। तब फ़िरौन ने अपनी सारी प्रजा के लोगों को आज्ञा दी, "इब्रियों के जितने बेटे उत्पन्न हों उन सभों को तुम नील नदी में डाल देना, और सब बेटियों को जीवित रहने देना।'' इन सब के बाद भी यहोवा की करूणा और अनुग्रह मूसा पर बहुतायत से हुआ, और उस ने फिरौन की बेटी को मूसा को बचाने के लिए तैयार किया।

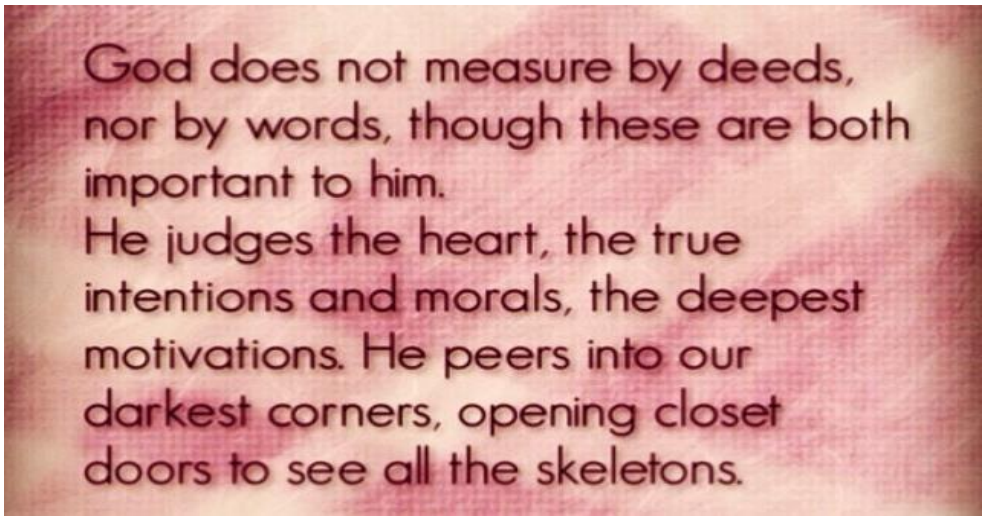

फुटबॉल के खेल में, जब कोई खिलाड़ी बेईमानी करता है या जानबूझकर किसी अन्य खिलाड़ी को चोट पहुँचाता है, तो उसे लाल कार्ड दिखाया जाता है और उसे अयोग्य घोषित कर दिया जाता है, और उसे तुरंत मैदान छोड़ना पड़ता है। परन्तु, जब हम परमेश्वर के विरुद्ध कुछ करते हैं, तो हम प्रत्यक्ष रूप से उनके कोप या क्रोध को अपने ऊपर नहीं देख सकते हैं, क्योंकि हम आत्मिक रूप से अंधे हैं। इसलिए, हम अपने जीवन को सुधारने की परवाह नहीं करते हैं, और हम अपने बुरे तरीकों को जारी रखते हैं।

पवित्र शास्त्र में, जब दुश्मनों ने नबी एलीशा को पहाड़ों में घेर लिया, तो एलीशा दुश्मनों के चारों ओर आग के रथों को देख सकता था, लेकिन उसका सेवक गेहजी उसे नहीं देख सका, क्योंकि वह आत्मारिक रूप से अंधा था। आज भी हमें इस संसार के नियम–कायदे ही दिखाई पड़ते हैं और इसलिए हम उनका भयपूर्वक पालन करते हैं। लेकिन हम प्रभु के नियमों का पालन नहीं करते हैं, क्योंकि हम प्रभु को नहीं देखते हैं और इसलिए, उनसे डरते नहीं हैं। हम आत्मारिक रूप से अंधे हैं। हमारी आत्मारिक आँखों से देखना बहुत महत्वपूर्ण है। याद रखें, हर साल प्रभु हमारी सेवकाई में भी बदलाव करते हैं! इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि हम परमेश्वर के नियमों का पालन करें और उनके सामने भय से अपना जीवन व्यतीत करें। आइए हम अपने जीवन में कभी भी उनके प्रेम को हल्के में न लें।

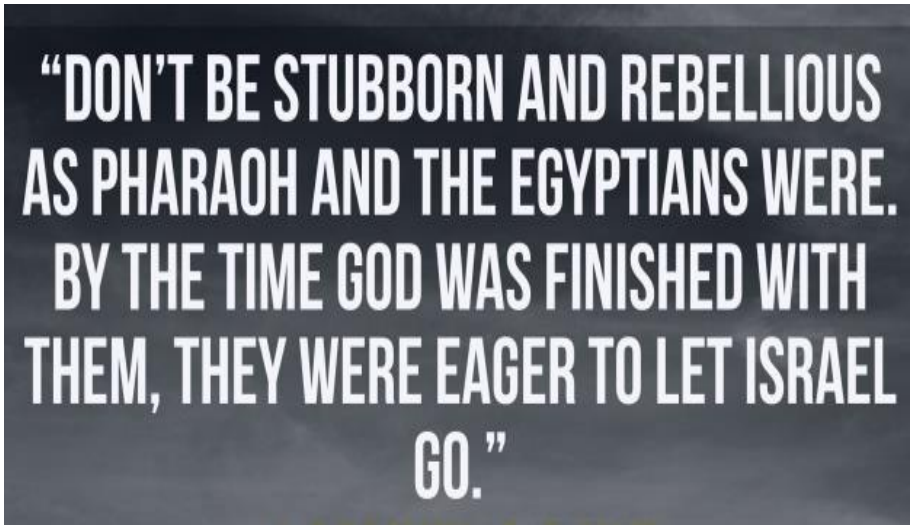

निर्गमन 2:1–10 ''लेवी के घराने के एक पुरुष ने एक लेवी वंश की स्त्री से विवाह कर लिया। वह स्त्री गर्भवती हुई और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ; और यह देखकर कि यह बालक सुन्दर है, उसे तीन महीने तक छिपा रखा। जब वह उसे और छिपा न सकी तब उसके लिये सरकंडों की एक टोकरी लेकर, उस पर चिकनी मिट्टी और राल लगाई, और उसमें बालक

को रखकर नील नदी के किनारे कांसों के बीच छोड़ आई। उस बालक की बहिन दूर खड़ी रही कि देखे उसका क्या हाल होगा। तब फ़िरौन की बेटी नहाने के लिये नदी के किनारे आई। उसकी सखियाँ नदी के किनारे–किनारे टहलने लगीं। तब उसने कांसों के बीच टोकरी को देखकर अपनी दासी को उसे ले आने के लिये भेजा। जब उसने उसे खोलकर देखा कि एक रोता हुआ बालक है, तब उसे तरस आया और उसने कहा, "यह तो किसी इब्री का बालक होगा।" तब बालक की बहिन ने फ़िरौन की बेटी से कहा, "क्या मैं जाकर इब्री स्त्रियों में से किसी धाई को तेरे पास बुला ले आऊँ, जो तेरे लिये बालक को दूध पिलाया करे?" फ़िरौन की बेटी ने कहा, "जा।" तब लड़की जाकर बालक की माता को बुला ले आई। फ़िरौन की बेटी ने उससे कहा, "तू इस बालक को ले जाकर मेरे लिये दूध पिलाया कर, और मैं तुझे मजदूरी दूँगी।" तब वह स्त्री बालक को ले जाकर दूध पिलाने लगी। जब बालक कुछ बड़ा हुआ तब वह उसे फ़िरौन की बेटी के पास ले गई, और वह उसका बेटा ठहरा; और उसने यह कहकर उसका नाम मूसा रखा, "मैं ने इसको जल से निकाला था।'' फिरौन ने नवजात इब्रानी नर बच्चे को मार डालने की युक्ति की, परन्तु हमारा प्रभु परमेश्वर सामर्थी है, और उसने फिरौन की बेटी को मूसा को बचाने के लिये तैयार किया, जो भविष्य में इस्राएलियों को छुड़ाएगा और दासत्व से छुड़ाएगा। हमारे जीवन और हमारे परिवारों में, प्रभु की कृपा प्राप्त करना बहुत महत्वपूर्ण है। हमें परमेश्वर के वचन और व्यवस्था के प्रति आज्ञाकारी रहना चाहिए।

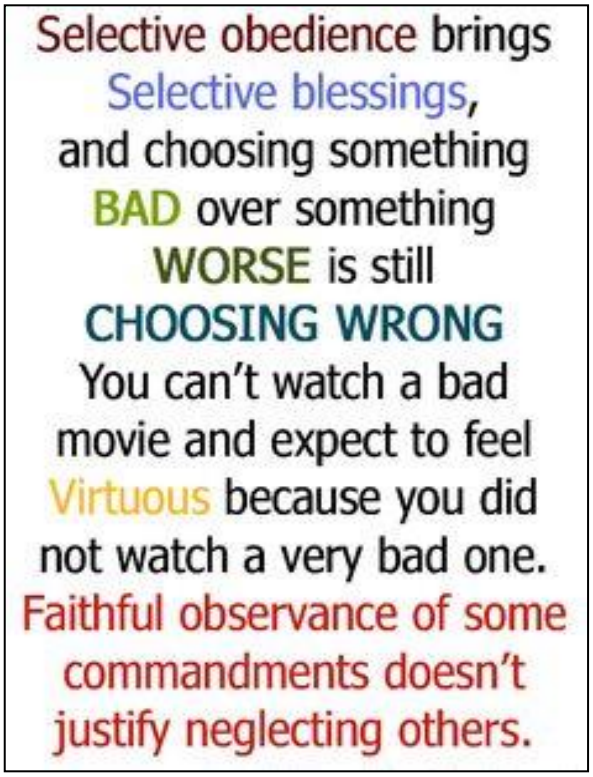

इसहाक परमेश्वर की आज्ञा के प्रति आज्ञाकारी था, और वह अकाल के समय इस्राएल में ही रह गया, और उसके लिए यहोवा के वचन को माना। हम ने देखा है कि किस प्रकार परमेश्वर यहोवा ने उसको आशीष दी, और उसे सौगुणा बढ़ाया और फलाया। अमालेकियों ने, जो इस्राएलियों के कट्टर शत्रु थे, यह देखा और अचम्भा किया; और वे इसहाक से मित्रता करने को आगे आए। हमें याद रखना चाहिए कि परमेश्वर अपनी 'शांति' फैलाने के लिए इस दुनिया में आए। इस उद्देश्य के लिए, यीशु ने क्रूस पर हमारे लिए अपना जीवन दे दिया। यदि हम इस महान बलिदान को स्वीकार नहीं करते हैं, तो हमारा जीवन निष्फल और व्यर्थ है।

आइए आज हम अपने जीवन पर विचार करें। यदि हम परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते हुए अपना जीवन परमेश्वर के लिए नहीं जीते हैं, तो हम किस योग्य हैं? हमारा जीवन छोटा है और इसकी कोई गारंटी नहीं है; हम आज जीवित हैं, लेकिन कल प्रभु ही जानते है। हमारा जीवन इस संसार में नष्ट न हो जाए, बल्कि हमें केवल परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते हुए जीवन व्यतीत करना चाहिए।

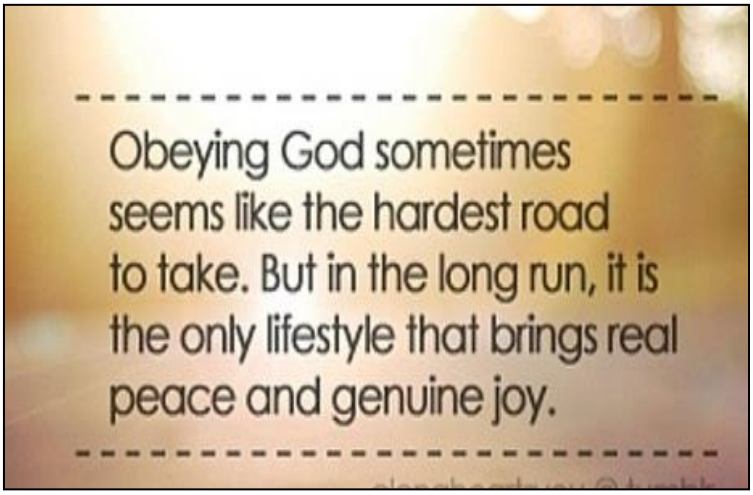

मैं प्रार्थना करती हूं कि यह संदेश हम में से प्रत्येक के जीवन में एक आशीष हो!

पास्टर सरोजा म।